विनाश दूत

मृदुला गर्ग

विनाश दूत

मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग

जन्म : 25 अक्तूबर, 1938।

जन्मस्थान : कलकत्ता (प. बंगाल)।

शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए.।

तीन-चार वर्षों तक अध्यापन करने के बाद 1970 से निरंतर लेखन-कार्य।

प्रकाशित पुस्तकें : उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित्तकोबरा, अनित्य, मैं और मैं (उपन्यास), कितनी कैदें, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम (कहानी-संग्रह); एक और अजनबी (नाटक)।

'उसके हिस्से की धूप' का स्वयं अंग्रेजी में अनुवाद तथा 'स्काई स्क्रेपर' नाम से अंग्रेजी में ही अनूदित-संपादित विभिन्न हिंदी कहानियाँ। कई भारतीय भाषाओं के अलावा जर्मन, चेक, अंग्रेजी और रूसी भाषाओं में भी कहानियों के अनुवाद प्रकाशित।

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद से 'उसके हिस्से की धूप' तथा आकाशवाणी द्वारा 'एक और अज़नबी' नामक कृतियों पुरस्कृत।

विनाश दूत

"मैं तुम्हारा संदेश तुम्हारी प्रेयसी तक नहीं ले जाऊँगा, हर्गिज नहीं ले जाऊँगा," मेघ ने साफ इनकार कर दिया।

कवि हतप्रभ रह गया। यह कैसे हो सकता है ? युगों से चली आ रही परिपाटी कहीं एक झटके में तोड़ी जा सकती है ? कालजयी कवि कालिदास ने वर्षा के प्रथम मेघ को ही चुना था न, अपने नायक का संदेश प्रेयसी तक पहुँचाने के लिए। बेचारा प्रेम करने के अपराध में इंद्रलोक से निकाल बाहर कर दिया गया था और प्रेयसी को बाहर कदम रखने की अनुमति नहीं मिली थी। अपनी-अपनी कैद दोनों ने भुगती। अलग। निपट अकेले। एक घर के बाहर जंगल में और एक घर के भीतर जंगल से निर्जन में। प्रेम उनका अपराध था और उनका त्रास। कालिदास का भी। राजाओं के प्रिय कवि जो ठहरे। तो वियोग की व्यथा और संभोग के आनंद का मोहक गायन-जाल बुना कवि ने और नन्हा मेघ फँस गया। नायक का प्रेमोन्मत्त संदेश ले जाने को तैयार ही नहीं, व्याकुल हो उठा। कविता के प्रभुत्व के अनुरूप ही था कवि का गायन और मेघ का उत्सुक संदेशवाहन। ऊँचाई पर विचरण करनेवाले ठहरे कालिदास। भोपाल के शामला हिल्स-सी ऊँचाई ? नहीं, कालिदास ने नाम दिया था कैलास। हिमालय के शीर्ष पर बसा देवताओं का निवासस्थान, जहाँ एम. आई. सी. या फॉसजीन पहुँच नहीं सकती थी। पहुँची तो खैर, शामला हिल्स भी नहीं। वह भी तो देवताओं का निवासस्थल है।

जरा सोचिए, ऐतिहासिक मेघ ने संदेश ले जाने से इनकार कर दिया होता तो ? कालिदास का मेघदूत अलिखित रह जाता। उस दुनिया में, जो तब तीसरी दुनिया भी नहीं थी पर अब पहली क्या, अकेली दुनिया बन बैठी है, भारत का नामलेवा कौन होता ? कौन जानता आज के हिंदुस्तान को, अगर भारत न होता ?

पर छोड़िए, बात आज की हो रही है। और आज, यहाँ, इस नाचीज़ वर्षा के पहले बादल ने कवि का हुक्म मानने से इनकार कर दिया है। कवि, जो कालिदास का हज़ारवाँ अवतार है, पैदा हुआ है, एक बार फिर कालिदास के अपने प्रदेश में।

कवि ठहरा ब्राह्मण, उसका पारा चढ़ गया। तनकर खड़ा हो गया मेघ को शाप देने के लिए। पर उसके भीतर के कवि ने उसे रोक लिया। मेघ और उसके वंशजों को शाप देने का अर्थ था, सूखी पड़ती जा रही धरती से

उसका रहा-सहा संबल भी छीन लेना।

अपने पर काबू रखकर उसने शांत, पर सख्त आवाज में मेघ को फटकारा-मेरा संदेश ले जाने से इनकार नहीं कर सकते तुम। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ऐसा करके कविता के उद्‌गम पर चोट कर रहे हो। कविता क्या है, प्रेम का त्रास और आनंद ही तो। उसकी अभिव्यक्ति में अवरोध डालोगे तो भावावेग का गला घुट जाएगा, भावना का गला घुट जाएगा, पराबौद्धिक रचना का रास्ता रुक जाएगा। फिर बचा क्या रहेगा धरती पर ? केवल जन्म और मृत्यु ? न-न, रचना का प्रस्फुटन कैसे होगा, कहाँ से आएगी उसकी लय-ताल, उसका भाव-संवेग, उसका चरम आह्लाद ?

मेघ हा-हा कर हँस दिया। चरम आह्लाद ! रचना का प्रस्फुटन ! और कहते हो अपने को कवि। बाहरी आँखें जो दिखलाती हैं, उतना-भर ही देख पाते हो, उससे परे कुछ नहीं ? जानते नहीं, यहाँ से 80 कि. मी. की दूरी पर शहर भोपाल है।

कहकर मेघ चुप हो रहा। कवि इंतजार करता रहा उसकी बात का, पर मेघ यों चुप्पी साधे था जैसे आगे कहने को कुछ हो ही नहीं, जैसे अंतिम सत्य उद्‌घाटित हो चुका हो, जैसे सबकुछ शेष हो चुका हो। श्मशान की प्रत्येक चिता जलकर बुझ चुकी हो। आग की लपटें सर्वस्व स्वाहा कर महाकाल-सी मूक हो गई हों।

कवि हैरान था और नाराज। बात समझ में नहीं आ रही थी। हैरान होने की उसे आदत नहीं थी। युगों से वह अपने को त्रिकालदर्शी मानता आया था, वह जो सबकुछ समझ सकता था, कवि होने के नाते। काल तीन, लोक तीन और कवि सबका ज्ञाता। पर संसार तब था एक लोक, तीन हिस्सों में बँटा नहीं था। पहली दुनिया को समझनेवाला कवि तीसरी। दुनिया को भी समझ सके, यह जरूरी नहीं पर यह आज की बात है, तब की नहीं, जब कालिदास ने मेघ को दूत बनाकर भेजा था।

जो हो, कवि अपने को त्रिकालदर्शी ही मानता था। बाल मेघ से स्पष्टीकरण माँगना उसके अहं को ठेस पहुँचाता था। पर था तो कवि। जिज्ञासा अहं से प्रबल थी। तो अहंकार भूल समाधान माँग ही लिया।

मेघ फिर हा-हा कर हँस दिया-देखने के साथ क्या सुनने-सूँघने की शक्ति भी गँवा बैठे कवि ? कीड़े पड़े कड़वे बादामों की गंध सूँघ नहीं पा रहे ? एकाएक छा गए सन्नाटे से तुम्हारे कान फटे नहीं जा रहे ? चीख-पुकार